अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय
(अंग-शास्त्र का परिचय)

		पृष्ठ
१.	अंगशास्त्र	१
२.	जैनागम तथा अगशास्त्र	२
३.	अंगशास्त्र का इतिहास	४
४	अंगशास्त्र की प्रामाणिकता	६
५.	अगशास्त्र का रचनाकाल	११
६.	अंगशास्त्र की शैली एव भापा	१३
७.	अंगशास्त्र की पदसंख्या	१५
८.	अंगशास्त्र की टीकाएँ	१६
९.	अंगशास्त्र का विपय तथा विवरण	१७

द्वितीय अध्याय
(आदर्श-महापुरुष)

१.	चौवीस तीर्थंकर	२३
२.	भगवान् ऋषभ	२४
	(अ) भागवत मे ऋषभदेव	२४
३	अन्य तीर्थंकर	३०
४.	भगवान् अरिष्टनेमि	३४
५	भगवान् पार्श्वनाथ	३६
	(अ) पार्श्व का चातुर्याम धर्म	३८
	(आ) पार्श्व-सघ	४२
	(इ) पार्श्व-कालीन श्रुत	४४
६.	भगवान् महावीर	४५
	(अ) जन्मकालीन परिस्थिति	४६
	(आ) जन्म	४७
	(इ) गृह-जीवन	५०
	(ई) गृह-त्याग तथा साधक-जीवन	५०

पृष्ठ

(उ) साधना का रहस्य ५३
(ऊ) तप ५४
(ए) निर्वाण ५८
(ऐ) उपदेश ५८
(ओ) सार्वजनिक सेवा .. ६२
(औ) तत्कालीन अन्य सम्प्रदाय ६४
(अ) संघ और शिष्य-परम्परा ... ७६
(अ) गण तथा गणधर ... ७८
(क) शिष्य-परम्परा .. ८०

तृतीय अध्याय

(जैन-तत्त्व-ज्ञान)

१. तत्त्व-ज्ञान . ८३
२. पूर्वीय तथा पश्चिमीय तत्त्वज्ञान की प्रकृति की तुलना ८३
३. जैन-तत्त्वज्ञान .. ८४
(अ) पदार्थ-निरूपण ८४
(१) जीव .. ८५
(अ) जीव के भेद ८६
(आ) गति ८६
(इ) इन्द्रिय ८७
(ई) शरीर .. ८९
(उ) जन्म ९०
(ऊ) भाव . ९०
(ए) लेश्या ९१
(ऐ) वेद .. ९२
(ओ) ज्ञान .. ९२
(औ) नय .. ९३
(२) अजीव .. ९५
(अ) पुद्गल .. ९५
(आ) धर्म तथा अधर्म .. ९५
(इ) आकाश .. ९६
(ई) काल .. ९६
(१) पल्योपम ९७
(२) सागरोपम . ९७

पृष्ठ

(३) आस्रव ९७
(४) बंध .. ९८
(५) सवर १०१
(६) निर्जरा १०१
(७) मोक्ष . १०२
(८), (९) पुण्य तथा पाप ... १०२
(ब) लोक का स्वरूप . .. १०२
(१) ऊर्ध्व-लोक ... १०३
(२) तिर्यग् लोक ... १०४
(अ) जम्बूद्वीप १०५
(३) अधोलोक १०६
(स) जैनधर्म और ईश्वर १०६

चतुर्थ अध्याय

(मानव-व्यक्तित्व का विकास)

१. विराट् विश्व . .. १०९
२. विश्व मे मानव का स्थान १११
३ मानव-जीवन की प्राप्ति १११
४. मानव-जीवन की महत्ता . .. ११२
५ विकास की परिभाषा ... ११३
५ व्यक्तित्व का विकास तथा उसके साधन ... ११५
७ उपासक तथा श्रमण जीवन . ११९
८ विकास की चरम अवस्था .. १२१
९ व्यक्तित्व-विकास की विभिन्न अवस्थाएँ (अ) . . १२१
(अ) अरिहत ... १२२
(१) तीर्थंकर ... १२३
(आ) सिद्ध ... १२९
(इ) आचार्य .. १३०
(ई) उपाध्याय . १३३
(उ) साधु ... १३४
१० व्यक्तित्व-विकास की विभिन्न अवस्थाएँ (ब) ... १३६

पृष्ठ

पंचम अध्याय
(उपासक-जीवन)

१.	उपासक-अवस्था	१४२
२	उपासक-अवस्था का महत्व ...	१४४
३.	उपासक-अवस्था मे सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र का महत्त्व ..	१४५
४	उपासक-अवस्था के भेद	१४८
५	उपासक-धर्म ...	१५१
	(अ) अणुव्रत	१५२
	(आ) दिग्व्रत ..	१५६
	(इ) उपभोग-परिभोग- परिमाण-व्रत ..	१६०
	(ई) अनर्थदण्डविरमण	१६३
	(उ) सामायिक ...	१६४
	(ऊ) देशावकाशिक ..	१६५
	(ए) पोषधोपवास ..	१६६
	(ऐ) यथासंविभाग .	१६६
	(ओ) उपासक की ११ प्रतिमा .	१६८
	(औ) मारणांतिक सल्लेखना तथा मरणोत्तर-विधान ..	१७२
६	उपासक का जीवन-क्रम ..	१७४
७	उपासक की विचारधारा ..	१७८

षष्ठ अध्याय
(श्रमण-जीवन)

१.	श्रमण-अवस्था	१८१
२.	श्रमणशब्द का निर्वचन तथा समानार्थक शब्द .	१८२
३	श्रमण-अवस्था का महत्व .	१८४
४	प्रव्रज्या	१८६
	(अ) प्रव्रज्या के कारण ..	१८६
	(आ) निष्क्रमण सत्कार ..	१८८
५	श्रमण-अवस्था के भेद ..	१८९
	(अ) पुलाक .	१९०
	(आ) वकुश .	१९०

		पृष्ठ
	(इ) कुशील	१९०
	(ई) निर्ग्रन्थ ..	१९०
	(उ) स्नातक ..	१९०
	(ऊ) आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष्य, कुल, गण, सघ, साधर्मिक ..	१९१
	(ए) साधु के २१ प्रकार के सवलदोप ..	१९१
६	श्रमण-धर्म ..	१९२
	(अ) महाव्रत ..	१९३
	(आ) समिति तथा गुप्ति	१९५
	(इ) धर्म ..	१९५
	(ई) परीपहजय . .	१९६
	(उ) संयम ...	१९७
	(ऊ) तप .	१९७
	(१) वाह्य-तप .	१९९
	(२) आभ्यन्तर-तप ...	२००
	प्रतिमा ..	२००
	सल्लेखना तथा मरणोत्तर-विधान ..	२०१
७	श्रमण की जीवनचर्या ..	२०५
	(अ) भिक्षावृत्ति .	२०५
	(आ) निवास, मलमूत्रप्रक्षेप तथा शय्या ..	२०६
	(इ) वस्त्र	२०८
	(ई) पात्र ..	२०८
	(उ) विहार ..	२०९
८	श्रमण-जीवन की विचारधारा ..	२१०

सप्तम अध्याय

(ब्राह्मण तथा श्रमण-संस्कृति)

१.	सस्कृति	२१४
२	ब्राह्मण-संस्कृति	२१४
३.	श्रमण-सस्कृति ..	२१५
	(अ) जैनसस्कृति ...	२१६
	(आ) वौद्धसस्कृति .	२१६
	(इ) जैन तथा बौद्धसस्कृति का अन्तर	२१७
४.	ब्राह्मण तथा श्रमणसस्कृति का अन्तर .	२१७
	(अ) वैषम्य तथा साम्य-दृष्टि .	२१७
	(आ) परस्पर प्रभाव और समन्वय . .	२२०

		पृष्ठ
५.	उभय संस्कृतियो की तुलना ...	२२०
	(अ) मानव-जीवन का उद्देश्य	२२०
	(आ) सस्कार	२२२
	(इ) विद्यार्थी-जीवन	२२४
	(ई) अध्ययन-काल	२२५
	(उ) ज्ञान की प्रतिष्ठा	२२५
	(ऊ) विद्या के अधिकारी	२२६
	(ए) शूद्रो का विद्याधिकार ...	२२८
	(ऐ) विद्यालय	२२९
	(ओ) अध्ययन के विषय ..	२३१
	(औ) शिक्षण-विधि	२३४
	(अ) अनुशासन ...	२३५
	(अ.) शिक्षक का व्यक्तित्व	२३६
	(क) समावर्तन ...	२३७
	(ख) विवाह ...	२३८
	(ग) वानप्रस्थ तथा संन्यास ...	२४०

अष्टम अध्याय

उपसंहार

१.	जैन-परम्परा मे मानवीय-विकास की रूपरेखा ...	२४४
२.	जैन-परम्परा के आदर्श ...	२४७
३.	जैन-परम्परा मे विकास की दो श्रेणियाँ और उनका परस्पर समन्वय	२४९

परिशिष्ट

१	सहायक ग्रन्थो की सूची	२५१
	(अ) जैन अगशास्त्र	२५१
	(आ) जैन आगम ग्रन्थ	२५२
	(इ) वैदिक ग्रन्थ ...	२५३
	(ई) बौद्ध ग्रन्थ	२५४
	(उ) अन्य ग्रन्थ .	२५५